Part – 1

प्रश्न 19. गोविन्द दासक " कुसुम - वन्दना " शीर्षक कविताक भावार्थ लिखू ।

उतर - कुसुम वन्दनामे कवि राधाक सौन्दर्यक वर्णन श्रीकृष्ण द्वारा कैल गेल अछि । यथा -

कानन कुसुम तोड़ल किय गोरी ।

कुसुमहि सब तन निरमित तोरी ।

श्रीकृष्ण राधाकेँ वाक् पाशमे बनधबा हेतु राधाक सम्पूर्ण शारीरिक सौन्दर्य उपमा - उपमानसँ प्रशंसा कैल अछि । राधे अहाँ फूलवारि मे फूल कियैक तोड़ैत छी, अहाँक त सम्पूर्ण देह फूले समान अछि ।

आनन - हेम सरोरूह भास ।

सौरभ श्याम - भ्रमर मिलु पास ॥

हे राधे अहाँक मुख स्वर्ण कमलके समान अछि । एहिसँ भ्रमर (कृष्ण) अहाँक आगा - पाछाँ करैत छथि । अहाँ

साक्षात् स्वर्ण कमलकेँ समान देहधारी छीहे तखन फूल कियैक तोड़य अएलहुँ ।

नयन युगल - निल उत्पल जोर ।

सहज सोहाओन श्रवनक ओर ।

अपरूप तिल - फुल सुतलित नास ।

परिमल जितल अमर तरू बास ।।

प्रिय राधिके अहाँक दूनू आँखि निल कमल के समान अछि , जे कान दिन बढल अछि । अहाँक सुन्दर नाक तिलक फूल समान सुन्दर लगैत अछि । वस्तुत: अहाँ पारिजात पुष्पसँ बढिकेँ सौन्दर्यशाली छी ।

बन्धुक मिलित अद्गर जहँ हास ।

दशनहि कुन्द कुसुम परकास ॥

प्रेमी कृष्ण अपन राधासँ कहैत छथि । - अहाँक ठोर मधुरी फूलक समान अछि , ओहि मधुरी फूलक लालीक संग अहाँक हँसब अछि ।